Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

23 नवंबर, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

साँची विवि में बौद्ध विद्वानों का जमावड़ा, आईएसबीएस का उद्घाटन

साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुदधिस्ट स्टडीज(आई.एस.बी.एस) के रजत जयंती सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस और बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर सम्मेलन में पढ़े जाने वाले शोधपत्रों की सार पुस्तिका और पुराने सम्मेलनों में पढ़े 2018 से 2021 के मध्य हुए आईएसबीएस सम्मलेनों का कार्यवाही विवरण का विमोचन भी हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि और वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो थिक नॉट टू ने भारत और वियतनाम के बीच बौद्ध अध्ययन में साँची विश्वविद्यालय की भूमिका बढ़ाने की बात की। प्रो थिक नॉट टू आईएसबीएस से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान है। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ ने व कि आईएसबीएस उदीयमान और स्थापित विद्वानों का साझा मंच है और वे साँची विवि को भारतीय ज्ञान परम्परा में शीर्ष पर स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं।

उद्घाटन सत्र में आई.एस.बी.एस के संस्थापक सचिव और साँची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ, विएतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर श्री थिक नॉट टू, आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी शर्मा और प्रो. नीता बिल्लोरिया को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया। प्रो. सीताराम दुबे को मंजूश्री व कमला देवी जैन सम्मान एवं प्रो. दीनानाथ शर्मा को प्रो. सागरमल जैन प्राच्य विद्या सम्मान से नवाजा गया। साँची विवि के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ को समर्पित एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन भी किया गया। प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने सन 2000 में आई.एस.बी.एस की स्थापना से लेकर संघर्षों का विवरण देते हुए कहा कि आज संगठन काफी फल-फूल रहा है।

उद्घाटन सत्र में नवनालंदा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि ये दौर आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस का है लेकिन बौद्ध दर्शन और भारतीय दर्शन से जुड़े शोधार्थियों, शिक्षकों को सावधानी से ए.आई का उपयोग करना चाहिए। उन्होने कहा कि तर्क को आधार बनाकर अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इंटरनेट तो हमसे जानकारी लेकर ही एआई के जरिये हमें वापस परोस रहा है।

कार्यक्रम में आई.एस.बी.एस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि गौतम बुद्ध सिर्फ एशिया ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को रोशनी दिखाने वाले प्रकाश पुंज थे। प्रो. राधा बल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि बुद्ध और उनके शिष्यों ने विमर्श के लिए कथा पद्धति का विकास किया था। जिसको आधार बनाकर ही बाद में जातक कथाओं ने रूप लिया। उन्होंने कहा कि बुद्ध ने दो चरम ध्रुवों को निषेध करके मध्य मार्ग अपनाने की शिक्षा दी है।
पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एस.एस मिश्रा ने कहा कि कि बुद्ध कहते थे कि मेरी बात को बिना सोचे समझे अपनाने के बजाय तर्क की कसौटी पर कसो, उसका परीक्षण करो और फिर उचित हो तो स्वीकार करो। जब तर्क किसी बात को माने तो उसे मान लो। उन्होंने कहा कि बौद्ध दर्शन में तर्क से विद्या और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है। तर्क अज्ञान को मिटाता है और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

उद्घाटन सत्र में आई.एस.बी.एस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी शर्मा ने अपने छोटे से उद्बोधन में कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को जीवन में उतारा जाए। उन्होंने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को आत्मसात करना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रो जीसी पाण्डे मेमोरियल लेक्चर में उनकी बेटी और मशहूर इतिहासविद प्रो सुष्मिता पाण्डे ने उनके जीवन वृत्त और कार्यों पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के प्रथम दिन दो तकनीकी सत्रों को भी आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रो. ईश्वरी विश्वकर्मा ने की। इसमें 10 से अधिक लोगों ने अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए। दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. सीताराम दुबे ने की। इस सत्र में भी 10 से अधिक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए गए।

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
एष धर्मः सनातनः

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

दिनांक- 24/11/2025 पृष्ठ क्रमांक- 6 संस्करण- भोपाल प्रधान संपादक- विजय कुमार दा

सांची बौद्ध विश्वविद्यालय में जुटे 150 देशों के विद्वान होगा मंथन

तीन दिवसीय रजत जयंती सम्मेलन में कई शोध पत्रों को किया जाएगा प्रस्तुत

रायसेन। साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिष्ट स्टडीज आई.एस.बी.एस के रजत जयंती सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस और बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर सम्मेलन में पढ़े जाने वाले शोधपत्रों की सार पुस्तिका और पुराने सम्मेलनों में पढ़े 2018 से 2021 के मध्य हुए आईएसबीएस सम्मलेनों का कार्यवाही विवरण का विमोचन भी हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि और वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो थिक नॉट टू ने भारत और वियतनाम के बीच बौद्ध अध्ययन में साँची विश्वविद्यालय की भूमिका बढ़ाने की बात की। प्रो थिक नॉट टू आईएसबीएस से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान है। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ ने व कि आईएसबीएस उदीयमान और स्थापित विद्वानों का साझा मंच है और वे साँची विवि को भारतीय ज्ञान परम्परा में शीर्ष पर स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं।

उद्घाटन सत्र में आई.एस.बी.एस के संस्थापक सचिव और साँची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ, विएतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर श्री थिक नॉट टूए आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रोण् एसण्पी शर्मा और प्रो. नीता बिल्लोरिया को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया। प्रो. सीताराम दुबे को मंजूश्री व कमला देवी जैन सम्मान एवं प्रो. दीनानाथ शर्मा को प्रो. सागरमल जैन प्राच्य विद्या सम्मान से नवाजा गया। साँची विवि के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ को समर्पित एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन भी किया गया। प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने सन 2000 में आई.एस.बी.एस की स्थापना से लेकर संघर्षों का विवरण देते हुए कहा कि आज संगठन काफी फल-फूल रहा है। उद्घाटन सत्र में नवनालंदा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि ये दौर आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस का है लेकिन बौद्ध दर्शन और भारतीय दर्शन से जुड़े शोधार्थियों, शिक्षकों को सावधानी से एण्आई का उपयोग करना चाहिए। उन्होने कहा कि तर्क को आधार बनाकर अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इंटरनेट तो हमसे जानकारी लेकर ही एआई के जरिये हमें वापस परोस रहा है। कार्यक्रम में आई.एस.बी.एस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रोण राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि गौतम बुद्ध सिर्फ एशिया ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को रोशनी दिखाने वाले प्रकाश पुंज थे। प्रोण् राधा बल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि बुद्ध और उनके शिष्यों ने विमर्श के लिए कथा पद्धति का विकास किया था। जिसको आधार बनाकर ही बाद में जातक कथाओं ने रूप लिया। उन्होंने कहा कि बुद्ध ने दो चरम ध्रुवों को निषेध करके मध्य मार्ग अपनाने की शिक्षा दी है।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रो जीसी पाण्डे मेमोरियल लेक्चर में उनकी बेटी और मशहूर इतिहासविद प्रो सुष्मिता पाण्डे ने उनके जीवन वृत्त और कार्यों पर प्रकाश डाला।

Date: 24/11/2025, Page: 6, City: Bhopal
Web: rashtriyahindimail.com

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

सम्मेलन | सांची विवि में बौद्ध विद्वानों का जमावड़ा, आईएसबीएस का उद्घाटन

रजत जयंती सम्मेलन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बौद्ध दर्शन के आयामों पर हुई चर्चा

प्रदेश ज्योति संवाददाता|भोपाल

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के रजत जयंती सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर सम्मेलन में पढ़े जाने वाले शोधपत्रों की सार पुस्तिका और पुराने सम्मेलनों में पढ़े 2018 से 2021 के मध्य हुए आईएसबीएस सम्मेलनों की कार्यवाही विवरण का विमोचन भी हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि और वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो थिक नॉट टू ने भारत और वियतनाम के बीच बौद्ध अध्ययन में सांची विश्वविद्यालय की भूमिका बढ़ने की बात कही। प्रो थिक नॉट टू आईएसबीएस से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान हैं। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि आईएसबीएस उदीयमान और स्थापित विद्वानों का साझा मंच है और वे सांची विवि को भारतीय ज्ञान परंपरा में शीर्ष पर स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं। उद्घाटन सत्र में आईएसबीएस के संस्थापक सचिव और सांची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ, वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर थिक नॉट टू, आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी. शर्मा और प्रो. नीरजा... को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। प्रो. सीताराम दुबे को मंजुश्री वकमन देवी जैन सम्मान एवं प्रो. दीनानाथ शर्मा को प्रो. सागरमल जैन प्राच्य विद्या सम्मान से नवाजा गया।

एआई का उपयोग करें भारतीय और बौद्ध दर्शन के शोधार्थी

उद्घाटन सत्र में नव नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि ये दौर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है लेकिन बौद्ध दर्शन और भारतीय दर्शन से जुड़े शोधार्थियों, शिक्षकों को सावधानी से एआई का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि तर्क को आधार बनाकर अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इंटरनेट तो हमसे जानकारी लेकर ही एआई के जरिये हमें वापस परोस रहा है। कार्यक्रम में आई.एस.बी.एस. के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि गौतम बुद्ध सिर्फ एशिया ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को रोशनी दिखाने वाले प्रकाश पुंज थे। प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि बुद्ध और उनके शिष्यों ने शिक्षा के लिए कथा पद्धति का विकास किया था। जिसको आधार बनाकर ही बाद में जातक कथाओं ने रूप लिया। उन्होंने कहा कि बुद्ध ने दो चरम धुवों को निषेध करके मध्य मार्ग अपनाने की शिक्षा दी है।

तकनीकी सत्र सत्र प्रस्तुत हुए रिसर्च पेपर

उद्घाटन सत्र के बाद प्रो जी.सी. पांडे मेमोरियल लेक्चर में उनकी बेटी और गायत्री... प्रो सुश्मिता पांडे ने उनके जीवन वृत्त और कार्यों पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के प्रथम दिन दो तकनीकी सत्रों को भी आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रो. ईश्वरी विश्वकर्मा ने की। इसमें 10 से अधिक लोगों ने अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए। दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. सीताराम दुबे ने की। इस सत्र में भी 10 से अधिक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए गए।

अज्ञान को मिटाता है बौद्ध दर्शनः पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एस.एस. मिश्रा ने कहा कि किसी बुद्ध कहते थे कि मेरी बात को बिना सोचे समझे अपनाने के बजाय तर्क की कसौटी पर कसें, उसका परीक्षण करें और फिर उचित हो तो स्वीकार करें। जब तर्क किसी बात को माने तो उसे मान लें। उन्होंने कहा कि बौद्ध दर्शन में तर्क से विवाद और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है। तर्क अज्ञान को मिटाता है और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। उद्घाटन सत्र में आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एसपी शर्मा ने अपने छोटे से उद्बोधन में कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को जीवन में उतारा जाए। उन्होंने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को आत्मसात करना चाहिए।

दैनिक भास्कर
2025-11-24
रायसेन (2)

तर्क आधारित अध्ययन ही बौद्ध दर्शन की आत्मा, एआई के उपयोग पर सावधानी की दी नसीहत

आईएसबीएस के रजत जयंती सम्मेलन का शुभारंभ, सांची विवि में जुटे देश–विदेश के बौद्ध विद्वान

अदनान खान | सलामतपुर

सांची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बौद्धिस्ट स्टडीज (आईएसबीएस) के रजत जयंती सम्मेलन का भव्य शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बौद्ध दर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों पर विस्तृत विमर्श हुआ। इस दौरान शोधपत्रों की सार पुस्तिका तथा 2018–2021 के सम्मेलनों की कार्यवाही विवरण पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि व वियतनाम बौद्ध विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर थिक नॉट टू ने कहा कि भारत और वियतनाम के बीच बौद्ध अध्ययन में सांची विवि की भूमिका लगातार मजबूत हो रही है। वे आईएसबीएस से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान बने।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

आईएसबीएस उदीयमान विद्वानों का साझा मंच

कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि आईएसबीएस उदीयमान और स्थापित विद्वानों का साझा मंच है। विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। नव नालंदा महाविहार के कुलगुरु प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने शोधार्थियों और शिक्षकों को एआई का सतर्क उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि तर्क आधारित अध्ययन ही बौद्ध और भारतीय दर्शन की नींव है। आईएसबीएस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने बुद्ध को विश्वज्योति बताते हुए कहा कि कथा पद्धति जातक कथाओं का आधार बनी। पणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एसएस मिश्रा ने तर्क को ज्ञान का मार्ग बताया।

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

रायसेन जिला

शोधार्थी एआई के उपयोग में बरतें सावधानी

- सांची विवि में बौद्ध विद्वानों का जमावड़ा, आईएसबीएस का उद्घाटन
- बौद्ध दर्शन और भारतीय दर्शन से जुड़े शोधार्थियों, शिक्षकों को सावधानी से ए .आई का उपयोग करना चाहिए :प्रो सिद्धार्थ

अदनान खान | सलामतपुर

बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज(आई.एस.बी.एस) के रजत जयंती सम्मेलन का उद्घाटन हुआ. उद्घाटन सत्र में आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) और बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई. इस अवसर पर सम्मेलन में पढ़े जाने वाले शोधपत्रों की सार पुस्तिका और पुराने सम्मेलनों में पढ़े 2018 से 2021 के मध्य हुए आईएसबीएस सम्मलेनों का कार्यवाही विवरण का विमोचन भी हुआ.

उद्घाटन सत्र में आई.एस.बी.एस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी शर्मा ने अपने छोटे से उद्बोधन में कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को जीवन में उतारा जाए. उन्होंने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को आत्मसात करना चाहिए. उद्घाटन सत्र के बाद प्रो जीसी पाण्डे मेमोरियल लेक्चर में उनकी बेटी और मशहूर इतिहासविद् प्रो सुष्मिता पाण्डे ने उनके जीवन वृत्त और कार्यों पर प्रकाश डाला. सम्मेलन के प्रथम दिन दो तकनीकी सत्रों को भी आयोजित किया गया. जिसकी अध्यक्षता प्रो. ईश्वरी विश्वकर्मा ने की. इसमें 10 से अधिक लोगों ने अपने रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए. दूसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. सीताराम दुबे ने की. इस सत्र में भी 10 से अधिक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किए गए.

सम्मेलन के मुख्य अतिथि और वियतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर प्रो थिक नॉट टू ने भारत और वियतनाम के बीच बौद्ध अध्ययन में सांची विश्वविद्यालय की भूमिका बढ़ाने की बात की. प्रो थिक नॉट टू आईएसबीएस से सम्मानित होने वाले पहले वियतनामी विद्वान हैं. इस अवसर पर कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि आईएसबीएस उदीयमान और स्थापित विद्वानों का साझा मंच है और वे सांची विवि को भारतीय ज्ञान परम्परा में शीर्ष पर स्थापित करने के लिए काम कर रहे हैं.

उद्घाटन सत्र में आई.एस.बी.एस के संस्थापक सचिव और सांची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. लाभ, विएतनाम बुद्धिस्ट विश्वविद्यालय के वाइस रेक्टर थिक नॉट टू, आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी शर्मा और प्रो. नीता बिल्लोरिया को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया. प्रो. सीताराम दुबे को मंजूश्री व कमला देवी जैन सम्मान एवं प्रो. दीनानाथ शर्मा को प्रो. सागरमल जैन प्राच्य विद्या सम्मान से नवाजा गया.

सांची विवि के कुलगुरु प्रो. लाभ को समर्पित एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन भी किया गया.

उद्घाटन सत्र में नवनालंदा महाविहार विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि ये दौर आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस का है लेकिन बौद्ध दर्शन और भारतीय दर्शन से जुड़े शोधार्थियों, शिक्षकों को सावधानी से ए.आई का उपयोग करना चाहिए. उन्होंने कहा कि तर्क को आधार बनाकर अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इंटरनेट तो हमसे जानकारी लेकर ही एआई के जरिये हमें वापस परोस रहा है.

कार्यक्रम में आई.एस.बी.एस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि गौतम बुद्ध सिर्फ एशिया ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को रोशनी दिखाने वाले प्रकाश पुंज थे. उन्होंने कहा कि बुद्ध और उनके शिष्यों ने विमर्श के लिए कथा पद्धति का विकास किया था. जिसको आधार बनाकर ही बाद में जातक कथाओं ने रूप लिया. उन्होंने कहा कि बुद्ध ने दो चरम ध्रुवों को निषेध करके मध्य मार्ग अपनाने की शिक्षा दी है.

पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. एस.एस मिश्रा ने कहा कि बुद्ध कहते थे कि मेरी बात को बिना सोचे समझे अपनाने के बजाय तर्क की कसौटी पर कसो, उसका परीक्षण करो और फिर उचित हो तो स्वीकार करो. जब तर्क किसी बात को माने तो उसे मान लो. उन्होंने कहा कि बौद्ध दर्शन में तर्क से विद्या और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है. तर्क अज्ञान को मिटाता है और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है.